

डॉ. फ्रेड पुटनम, भजन, व्याख्यान 3

© फ्रेड पुटनम और टेड हिल्डेब्रांट

यह स्तोत्रों की पुस्तक पर डॉ. फ्रेड पुटनम की प्रस्तुति क्रमांक तीन है। डॉ. पुत्ताम.

दूसरे व्याख्यान में, मैंने क्रिस्टीना रोसेटी की एक संक्षिप्त कविता, वॉटर हेवी पढ़ी। और वह कविता कुछ और भी दर्शाती है जो सामान्यतः कविता के बारे में सच है। और यही पैटर्न का विचार है। और पैटर्न से हमारा मतलब है कि चीजों को दोहराया जाता है, या उन्हें कुछ तरीकों से एक साथ रखा जाता है ताकि समग्र प्रभाव अलग-अलग हिस्सों के योग से अधिक हो।

तो, उस कविता में, पानी भारी, पानी संक्षिप्त, पानी कमजोर, पानी गहरा, प्रश्नों का पैटर्न, क्रमिक प्रश्न, हमें प्रत्येक पंक्ति के साथ अगली पंक्ति के लिए एक प्रश्न की उम्मीद करने के लिए प्रेरित करते हैं। और हम पैटर्न को बहुत छोटे पैमाने पर और पैटर्न को बहुत बड़े पैमाने पर देख सकते हैं। बाइबिल कविता के बारे में बात करने और जो कुछ प्रतीत होता है उसे देखने में शायद मानसिक हकलाहट होती है, यानी कवि खुद को दोहराते दिखते हैं।

वे एक बात कहते हैं, फिर वे इसे दोबारा कहते हैं, वे एक बात कहते हैं, वे फिर से कहते हैं, वे एक बात कहते हैं। तो हे भजन 2, जाति जाति में क्यों कोलाहल मचता है, और देश देश के राज्य देश के लोग व्यर्थ की युक्ति निकालते हैं? खैर, इस तरह का मतलब एक ही है, है ना? राजा, पद दो, पृथ्वी के राजा अपना रुख अपनाते हैं, शासक प्रभु और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध एक साथ सलाह करते हैं। इसलिए, वे अपना रुख अपनाते हैं, वे एक साथ सलाह लेते हैं, ये पृथ्वी के राजा हैं, शासक हैं, आइए हम उनकी बेड़ियाँ तोड़ दें और उनकी रस्सियों को अपने ऊपर से दूर फेंक दें।

वे लगभग एक जैसे लगते हैं। श्लोक चार, जो स्वर्ग में बैठा है वह हंसता है, प्रभु उनका उपहास करता है। पद पाँच, तब वह अपने क्रोध में उन से बातें करेगा, और अपने क्रोध में उन्हें डरा देगा।

खैर, पाँचवाँ थोड़ा अलग है। किसी से बात करने और उन्हें डराने के बीच बिल्कुल वही अंतर नहीं है। और वह भी कुछ ऐसा इंगित करता है जो अक्सर दूसरी पंक्ति को थोड़ा आगे बढ़ाता है, उसे थोड़ा मजबूत बनाता है।

लेकिन मुद्दा यह है कि हम बाइबिल कविता में, इस निरंतर परस्पर क्रिया को पाते हैं, जहां कवि कुछ कहता है, और फिर कुछ ऐसा कहता है जो उससे बहुत निकटता से संबंधित है, लेकिन बिल्कुल उसी तरह नहीं। और अंग्रेजी कविता में, कविता कविता को व्यवस्थित करने का एक तरीका है। इसलिए यदि आप अब तक याद कर सकते हैं, जब आपने सॉनेट्स का अध्ययन किया था, तो आप जानते हैं कि कविता योजना ए, बी, बी, ए है। इसलिए पहली पंक्ति ए है और दूसरी पंक्ति बी है, एक शब्द के साथ समाप्त होती है जो लगता है, कि हम बी को कॉल करेंगे और ए, बी, बी, ए, और वह पैटर्न दोहराया जाएगा।

तो, पहली और चौथी पंक्तियाँ एक जैसी लगती हैं, दूसरी और तीसरी पंक्तियाँ एक जैसी लगती हैं, और फिर पाँचवीं और आठवीं और आदि। खैर, अंग्रेजी कविता में, कविता अक्सर एक आयोजन विधि होती है। यह एक उपकरण है जिसका उपयोग हमें यह दिखाकर कि कौन सी पंक्तियाँ एक साथ चलती हैं, एक कविता को व्यवस्थित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

हिब्रू कविता में छंद का प्रयोग नहीं होता। इसके बजाय, यह उस चीज़ का उपयोग करता है जिसे समानता कहा जाने लगा है। और यह विचार है कि एक रेखा अपने से पहले वाली रेखा को प्रतिबिंबित करती है, या हम दूसरे तरीके से कह सकते हैं, एक रेखा अपने बाद आने वाली रेखा को प्रतिबिंबित करती है या उसका अनुमान लगाती है।

यह क्या है? खैर, यह एक बहुत ही त्वरित सारांश है। एक बिंदु पर, रब्बियों ने कहा कि ईश्वर स्वयं को कभी नहीं दोहराएगा। तो, इसलिए, दो पंक्तियों का मतलब कुछ बहुत अलग होना चाहिए।

और वे दोनों पंक्तियों के बीच जितना संभव हो उतना अंतर जानने का प्रयास करते हैं। तो हम राष्ट्रों को लोगों से कैसे अलग कर सकते हैं? हम हंगामे में होने को व्यर्थता या कोई खोखली चीज़ रचने से कैसे अलग कर सकते हैं? और ऐसा करना संभव है। लेकिन फिर, शायद 17वीं शताब्दी में, आर्कबिशप लूथ ने व्याख्यानों की एक श्रृंखला दी, वह वास्तव में किसी और चीज़ के बारे में बहस कर रहे थे।

लेकिन साथ ही, उन्होंने कहा कि बाइबिल कविता को समानता से बना हुआ बताया जा सकता है ताकि पंक्तियाँ एक दूसरे के समानांतर हों। और आमतौर पर यह दो पंक्तियाँ होती हैं, कभी-कभी यह तीन या चार, यहाँ तक कि पाँच भी होती हैं। यह बहुत दुर्लभ है।

आमतौर पर, यह दो होते हैं, कभी-कभी तीन। और लूथ ने कहा कि रेखाओं के बीच ये संबंध तीन प्रकार के होते हैं। कभी-कभी वे वही बात कह रहे होते हैं, जैसे भजन 1 में ये उदाहरण। वास्तव में, यह शायद भजन की किताब में सबसे आम प्रकार की समानता है।

दूसरी ओर, नीतिवचन की पुस्तक में, जैसा कि हम उम्मीद कर सकते हैं, क्योंकि आपके पास ज्ञान और मूर्खता के बीच एक विरोधाभास है, सामान्य प्रकार, या सामान्य प्रकार की समानता, एक विरोधाभास है, जहाँ वे विपरीत प्रकार की बात कहते हैं। इस प्रकार बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है, परन्तु मूर्ख स्त्री उसे अपने ही हाथों से ढा देती है। या बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को प्रसन्न करता है, मूर्ख पुत्र अपने पिता के लिए दुःख, माता के लिए दुःख, क्षमा करें।

तो, वही, आप जानते हैं, दो पंक्तियाँ एक दूसरे के विपरीत हैं। दूसरे में विरोधाभास, वैसे, पिता और माँ के बीच नहीं है, यह बेटे के व्यवहार के प्रभाव, बेटे के प्रकार और उसके माता-पिता पर उसके व्यवहार के प्रभाव के बीच है। वह नीतिवचन 10.1 है। और फिर बाइबिल में ऐसे कई मामले हैं जहाँ कोई समानता नहीं है।

अब, फिर से, हमारे अनुवाद और मैं कहूंगा कि विद्वान इसे जिस सामान्य तरीके से देखते हैं, वह यह है कि कहीं न कहीं समानता होनी चाहिए। लेकिन इसके बजाय, ऐसा लगता है कि हमारे पास जो कुछ है वह केवल अलग-अलग लंबाई वाली रेखाएं हैं। उनमें से अधिकांश काफी छोटे हैं।

हिब्रू में, वे काफी छोटे हैं। तो हिब्रू में, प्रति कहावत शब्दों की औसत संख्या सात और नौ के बीच है। जब आप इसका अंग्रेजी में अनुवाद करते हैं, तो यह बढ़कर 13 हो जाता है, लगभग 28 तक, यह इस पर निर्भर करता है कि उन्हें क्या करना है।

इसलिए, वे अब कहावतों जैसी ध्वनि में विश्वास नहीं करते। और यही बात स्तोत्र की किताब में भी सच है, जहाँ, आप जानते हैं, एक बार जब वे अनुवाद करना शुरू करते हैं, तो चीज़ें लंबी हो जाती हैं और उन्हें इधर-उधर ले जाना पड़ता है क्योंकि भाषाएँ अलग-अलग होती हैं। लेकिन फिर भी, हम देख सकते हैं कि यदि हम भजन 2 पढ़ते हैं, और मैं उन छंदों को दोबारा नहीं पढ़ने जा रहा हूँ, तो मैं आपको उन्हें स्वयं पढ़ने दूँगा।

जब हम श्लोक छह पर आते हैं, तो श्लोक छह वास्तव में एक एकल वाक्य है, इसके सामने के पाँच श्लोकों के विपरीत। एक से पाँच श्लोक, प्रत्येक में दो समानांतर रेखाएँ हैं। तो श्लोक तीन, आइए हम उनकी बेड़ियाँ तोड़ दें और उनकी रस्सियों को अपने से दूर फेंक दें।

श्लोक चार, और श्लोक पांच, एक ही कार्य करें। श्लोक छह में एक पंक्ति है। इसकी लंबाई दोगुनी है, वास्तव में, यह इसके पहले आई किसी भी पंक्ति की लंबाई से दोगुनी से भी अधिक है, जो सभी आमतौर पर तीन शब्द हैं, कभी-कभी हिब्रू में चार शब्द होते हैं।

और इसमें हिब्रू में सात शब्द हैं, निःसंदेह अंग्रेजी से कहीं अधिक। बाइबिल की कविताओं में पाठक को यह दिखाने का यह एक काफी मानक तरीका है कि हम एक खंड के अंत तक आ गए हैं। कभी-कभी वह पंक्ति जो यह संकेत देती है कि हम किसी अनुभाग के अंत में आ गए हैं, बहुत छोटी होगी, एक या दो शब्द।

आमतौर पर, यह पिछली पंक्तियों की तुलना में काफी लंबी होती है। बड़ा सवाल यह है, या वास्तव में बड़ा सुराग यह है कि कवि एक पैटर्न स्थापित करता है और फिर वह कुछ ऐसा करता है जो पैटर्न को तोड़ देता है। तो, हम भजन 2 के पहले पाँच छंदों में पढ़ते हैं, तीन शब्द, तीन शब्द, तीन शब्द, तीन शब्द, वगैरह, वगैरह।

और फिर अचानक सात शब्द। और इसलिए, हमें खुद से कहना चाहिए, वाह, यहाँ क्या हो रहा है? न सिर्फ इसका मतलब क्या है, बल्कि यह भी कि उसने इसे इस तरह क्यों किया है? क्योंकि वास्तव में, श्लोक सात से शुरू होकर, श्लोक सात भजन 2 का एक नया खंड शुरू करता है। यह अब एक भजन है जिसमें भजनकार प्रभु को उद्धृत करता है। और हमारे पास उनके संबंधों की यह चर्चा है, छंद सात से नौ तक, और फिर 10 से 12 में उन राजाओं के लिए एक आह्वान है जो छंद एक से तीन तक विद्रोह कर रहे थे।

श्लोक 10 से 12 में भजनहार उन्हें समर्पण और आज्ञाकारिता के लिए बुलाता है। और वास्तव में, हम उनमें से प्रत्येक मामले में पाते हैं कि कविता के भीतर ही किसी प्रकार का असंतोष है। अंग्रेजी में, हम कई बार एक खाली पंक्ति छोड़कर ऐसा करते हैं, जो भजन 2 के मेरे संस्करण में भी सच है। उदाहरण के लिए, छंद तीन, छह और नौ के बाद रिक्त पंक्तियाँ हैं।

लेकिन फिर, वे मौलिक नहीं हैं। उन्हें संपादकों द्वारा जोड़ा गया है। अंग्रेजी में हम इसे तुकबंदी के माध्यम से भी करते हैं।

हिब्रू इसे समानता की शैली, प्रकार और रेखा की लंबाई के माध्यम से करता है। इसलिए जब हम एक कविता पढ़ते हैं, तो हम पाते हैं कि इसकी रचना कैसे की गई है, यानी इसके टुकड़े कैसे बनाए गए हैं, इस पर ध्यान देने से वास्तव में यह पता चल जाता है कि संपूर्ण भजन की रचना कैसे की गई है। वे कह सकते हैं, क्या यह पांडित्यपूर्ण बात नहीं है? हम इस बात की चिंता क्यों करना चाहते हैं कि पूरी कविता की रचना कैसे की गई है? क्योंकि क्या बाइबल का अध्ययन करने में हमारा लक्ष्य यह नहीं है कि वह जो कहती है उसके प्रति समर्पण कर दे? और उस समर्पण का एक हिस्सा कवि के विचारों को उसके या उसके बाद सोचना सीखना है।

मुझे बस एक क्षण के लिए स्थान बदलने दीजिए। मान लीजिए कि आप बाइबल अध्ययन का नेतृत्व करने जा रहे हैं या उपदेश देने जा रहे हैं या भजन 113 पर संडे स्कूल का पाठ देने जा रहे हैं। तो, आप कहते हैं, ठीक है, मेरा पहला बिंदु श्लोक पाँच में है।

मेरा दूसरा बिंदु श्लोक दो और तीन में है। मेरा तीसरा बिंदु श्लोक नौ में है। और मेरा चौथा बिंदु, निष्कर्ष श्लोक एक है।

इसमें दिक्कत क्या है? खैर, मुझे लगता है कि असली समस्या यह है कि कवि ने इसे इस तरह से नहीं लिखा है। वह इन पदों के बारे में नहीं सोच रहा था, मुझे याद नहीं है, मुझे याद नहीं है कि मैंने उन छंदों को किस क्रम में दिया था, लेकिन वह पाँच, चार, तीन, दो के बारे में नहीं सोच रहा था, वह एक से नौ के बारे में सोच रहा था। खैर, श्लोक संख्याएँ मूल नहीं थीं, लेकिन वह इसके बारे में उसी क्रम में सोच रहा था जिस क्रम में यह लिखा गया था।

वह चाहता है कि हम इसे उसी क्रम में पढ़ें ताकि जब हम श्लोक नौ पर आएँ, चाहे हम सोचें कि यह सबसे महत्वपूर्ण श्लोक है या दूसरा बिंदु या जो कुछ भी, हम इसके बारे में जो भी सोचें, हम श्लोक एक पढ़ने के बाद श्लोक नौ पर आएँ। आठ तक, एक से आठ तक श्लोक क्या कह रहे हैं, इसके बारे में हमने सोचा है। वही बात जब हम समानता के बारे में बात करते हैं, तो हम कहते हैं, ओह, मेरे यहाँ दो पंक्तियाँ हैं। ये दोनों पंक्तियाँ कैसी हैं, हम हमेशा अपने आप से पूछते हैं कि प्रत्येक पंक्ति अगली पंक्ति से कैसे संबंधित है? क्योंकि कवि ने इसे इसी तरह लिखा है।

प्रत्येक पंक्ति अपने से पहले की रेखा को दर्शाती है या उसके विपरीत है या उससे कुछ कदम दूर है। तो, हम भजन 113 पद दो पढ़ते हैं, यहोवा का नाम अब से लेकर सर्वदा तक धन्य है, सूर्य के उदय से लेकर अस्त तक यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है। वाह, ये दो लंबी पंक्तियाँ हैं।

और वास्तव में, वे बहुत लंबे हैं। वे एकल वाक्य हैं। इसलिए पद्य के भीतर कोई समानता नहीं है, बल्कि इसके बजाय, समग्र रूप से दोनों पद एक-दूसरे के समानांतर हैं।

तो, हमारे पास शुरुआत में है, यह वास्तव में अच्छा है। आप इसे अपनी बाइबिल में देखें, पंक्ति ए के लिए पद दो, प्रभु का नाम धन्य है, पद तीन, पंक्ति बी, ठीक है, यहां नीचे, प्रभु के नाम की स्तुति की जानी है। ओह, वे चीजें समानांतर हैं।

और दो मध्य रेखाओं, दो बी और तीन ए को, इस समय से आगे और हमेशा के लिए, सूर्य के उदय से लेकर उसके अस्त होने तक, समय और स्थान, पूर्व से पश्चिम तक देखें। वह समय की बात नहीं कर रहा है। तो, क्या यह अच्छा नहीं है? क्या आपने देखा कि उसने अभी क्या किया? उन्होंने बस यही विचार लिया कि ईश्वर की स्तुति हर जगह और हमेशा की जानी चाहिए।

और उन्होंने ऐसा यूँ ही नहीं कहा। इसके बजाय, उसने इसे उल्टा कर दिया और हमसे पूछा, यह कैसा दिख सकता है? या फिर हम कैसे सोच सकते हैं, हम उसके बारे में सोच भी कैसे सकते हैं? और इसलिए, यह एक बहुत ही अमूर्त विचार लेता है और इसे थोड़ा और ठोस बनाता है। हमेशा और हर जगह, इस समय से, इस बार कहने के बजाय, मुझे पता है कि यह समय क्या है।

और हमेशा के लिए, मैं बिल्कुल नहीं जानता कि इसका क्या मतलब है, लेकिन यह लंबे समय तक चलता रहता है। और पूर्व से पश्चिम तक, मैं जानता हूँ कि वह क्या है। और उन दो चीजों को बीच में रखना, दूसरे को बाहर रखना, एक बहुत ही सामान्य बाइबिल पैटर्न में जिसे चियास्म या चियास्म कहा जाने लगा है।

क्योंकि जब आप इसे एक निश्चित तरीके से व्यवस्थित करते हैं और चीजों को जोड़ने वाली रेखाएं खींचते हैं, तो यह ची अक्षर बनाता है, जो ग्रीक में हमारे एक्स जैसा दिखता है। और इसलिए, लोग इस तरह की चीज़ को चियास्म या चियास्म कहते हैं। हम वास्तव में नहीं जानते कि उन्होंने चीजों को चियास्म के रूप में क्यों लिखा। 10वीं शताब्दी ईसा पूर्व की हिब्रू कविता का कोई मैनुअल नहीं है, जिसे खोजना मुझे अच्छा लगेगा।

लेकिन हम जानते हैं कि उन्होंने ऐसा कई-कई बार किया। कभी-कभी इसका उपयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए, नीतिवचन में, जहां आपके पास विरोधाभासी पंक्तियां होती हैं। और इसलिए, शब्दों को उनके क्रम में फ़्लिप किया जाएगा।

और यह पंक्तियों के अर्थ में विरोधाभास के साथ-साथ सही होता है। अन्य बार, यहाँ की तरह, दो पंक्तियों का मतलब एक ही है, लेकिन यह उलटा है। ऐसा लगता है, ठीक है, शायद ऐसा ही है, क्या आपने कभी इसके बारे में सोचा है? जब एक कवि एक सॉनेट लिखने के लिए बैठता है, तो उसने 140 अक्षरों में संवाद करने का फैसला किया है, जो 10 अक्षरों के समूहों में विभाजित है, जिनमें से प्रत्येक 10वां अक्षर एक विशेष कविता योजना में आएगा, और वह एक विशेष मीटर का पालन करेगा।

उस आयंबिक की तरह. इसे आठ पंक्तियों की एक निश्चित तार्किक संरचना के साथ व्यवस्थित किया जाएगा जो एक समस्या, एक प्रश्न या एक स्थिति को सामने लाती है और छह पंक्तियाँ जो इसे हल करती हैं या समझाती हैं। या 12 पंक्तियाँ, दूसरे प्रकार का सॉनेट, 12 पंक्तियाँ जो एक समस्या उत्पन्न करती हैं और दो पंक्तियाँ जो इसे घेरती हैं या अधिक बार शेक्सपियर में, इसे अपने सिर पर रख देती हैं, इसे उल्टा कर देती हैं।

कवि ने क्या किया? खैर, उसे या खुद को बहुत प्रतिबंधित कर दिया। सीएस लुईस ने एक बार एक सॉनेट लिखा था और कहा था कि यह इतना कठिन है कि वह कभी दूसरा सॉनेट नहीं लिखेंगे। यह वास्तव में सच नहीं है।

उन्होंने कुछ और भी लिखा, लेकिन ऐसा करना बहुत कठिन है। कोई ऐसा क्यों करेगा? कोई क्यों कहेगा, मैं कविता को चिआस्म में लिखने जा रहा हूँ ताकि पंक्तियाँ लगभग सही, समान लंबाई की हों, अन्यथा यह सही नहीं लगती, फिट नहीं बैठती। आपके पास ऐसे शब्द होने चाहिए जो किसी न किसी तरह से एक-दूसरे से मेल खाते हों।

आपके पास ऐसी अवधारणाएँ होनी चाहिए जो इसमें फिट बैठें। हम प्रशंसा, समय, स्थान, प्रशंसा या आशीर्वाद के बारे में बात करेंगे ताकि हमें यह पैटर्न मिल सके जो शब्दों और विचारों में दिखाई देता है। खैर, हम वास्तव में नहीं जानते।

कोई सॉनेट लिखने और खुद को उस यातना के लिए समर्पित करने का फैसला क्यों करेगा? खैर, इसका एक हिस्सा यह है कि यह एक ऐसा रूप है जिसे मान्यता प्राप्त है। और इसलिए, यह एक ऐसा रूप है जिसका उपयोग किया जाता है। यह उसी तरह है जैसे उन्होंने लिखा है।

ठीक उसी तरह जैसे समानता के कारण उन्होंने कविता लिखी। उन्होंने लिमरिक नहीं लिखे। बाइबल में कोई लिपि नहीं है, लेकिन उन्होंने बहुत सारी महान कविताएँ लिखी हैं जिन्हें बहुत सावधानी से एक साथ रखा गया है और संरचित किया गया है, जैसा कि हम अपने चौथे व्याख्यान में देखेंगे।

यदि आप भजन 114 को देखें, तो यह एक छोटा भजन है, जिसमें आठ छंद हैं। प्रत्येक पंक्ति अपने सामने की रेखा को प्रतिबिंबित करती है, और कुछ बहुत करीबी पुनरावृत्ति होती है। इसलिए, यह कहता है, जब इस्राएल लड़खड़ाती जीभ वाले लोगों से मिस्र से याकूब के घर में चला गया, तो यहूदा उसका अभयारण्य बन गया, और इज़राइल उसका प्रभुत्व बन गया।

समुद्र ने देखा और भाग गया। जॉर्डन पीछे मुड़ गया। पहाड़ मेढ़ों की नाई उछले, और पहाड़ियाँ मेमनों की नाई उछलीं।

आपके साथ क्या है? इसका अनुवाद करना थोड़ा कठिन है। समुद्र है कि तुम भागते हो, यरदन है कि तुम लौट आते हो, पहाड़ है कि तुम मेढ़ों की नाई कूदते हो, और पहाड़ियाँ जिन पर तुम मेढ़ों के समान छलांग लगाते हो। यहोवा के सामने, याकूब के परमेश्वर के सामने, जिस ने चट्टान को जल का कुंड, और चकमक पत्थर को जल का सोता बना दिया है, पृथ्वी कांप उठ।

प्रत्येक रेखा अपने से पहले की रेखा को दर्शाती है। और वास्तव में, वे अक्सर इसके पहले की पंक्ति को प्रतिबिंबित करते हैं, कि आमतौर पर, या कई बार, वे क्रिया को दूसरी पंक्ति से बाहर ही छोड़ देते हैं। इसलिए, जब इस्राएल मिस्र से निकला, तो याकूब का घराना अजीब भाषा वाले लोगों से निकला, यह नहीं कहता कि याकूब का घराना अजीब भाषा या लड़खड़ाती जीभ वाले लोगों से निकला।

खैर, यह बहुत सामान्य बात है। कवि चाहता है कि हम क्रिया को पहली पंक्ति से दूसरी पंक्ति में डालें। आप देखिए, यह हमें ध्यान आकर्षित करने का एक बहुत ही चतुर तरीका है, है ना? मुझे यह सुनिश्चित करने के लिए पिछली पंक्ति को पर्याप्त रूप से याद करना होगा कि मैं दूसरी पंक्ति में वह क्रिया डाल रहा हूँ जिसका वह इरादा रखता है।

मुझे ऐसा नहीं लगता कि जब इसराइल मिस्र से निकला था, याकूब का घराना अजीब भाषा के लोगों के पहले बच्चे की मौत की विपत्ति के बाद आधी रात तक भाग गया था। वह ऐसा नहीं कहता। वह सिर्फ इतना कहता है कि बाहर गया था।

या यहूदा उसका अभयारण्य बन गया। इजराइल सिर्फ इतना कहता है कि इजराइल उसका प्रभुत्व बन गया। अब कई बार, हमारे अंग्रेजी अनुवाद क्रिया को दूसरी पंक्ति में डाल देंगे, या वे वहां कुछ डाल देंगे क्योंकि उन्हें लगता है कि इसे समझना हमारे लिए बहुत कठिन हो सकता है।

लेकिन आप जानते हैं, अगर यह वहां नहीं है, तो इसका कारण यह है कि यह वहां नहीं है। और ऐसा इसलिए है क्योंकि कवि इस तरह से लिख रहा है जो वास्तव में उन दो पंक्तियों को एक साथ अधिक निकटता से बांधता है बजाय अगर उसने दूसरी पंक्ति में कोई क्रिया दी हो। तो हम इसे देखते हैं, और हम इस स्तोत्र को थोड़ा और ध्यान से देखते हैं, हम देखते हैं कि श्लोक तीन और चार श्लोक पाँच और छह में प्रतिबिंबित होते हैं।

तो, श्लोक तीन और चार में, समुद्र देखता रहा और भाग गया, यरदन पीछे मुड़ गया, पहाड़ मेढ़ों की तरह उछले, और पहाड़ियाँ मेमनों की तरह उछलीं। आपको क्या रोग है? आपके साथ क्या है? देखो कि तुम भाग जाते हो, देखो, 3ए पर वापस चला जाता है। 5बी 3बी के साथ जाता है, 6ए और 6बी 4ए और 4बी के साथ जाता है।

और वास्तव में, 4बी और 6बी हिब्रू में समान हैं, समान हैं, क्योंकि हिब्रू में कोई प्रश्न चिह्न नहीं हैं। क्षमा करें, मुझे पता है कि इससे आपको निराशा होगी, लेकिन उन्हें जोड़ दिया गया है। तो यह सिर्फ इतना कहता है कि पहाड़ियाँ मेमने की तरह हैं।

और हम इस संदर्भ से समझते हैं कि पहला एक कथन है, दूसरा एक प्रश्न है। खैर, समानता को देखते हुए, हम हर बार खुद से पूछते हैं कि इन दो रेखाओं के बीच क्या संबंध है? अब, चाहे हम लोथ, बिशप लोथ, या आर्कबिशप लोथ की शब्दावली लेकर आएँ, शब्दावली वास्तव में मुद्दा नहीं है। वास्तव में, कभी-कभी वह शब्दावली हमारे रास्ते में आ सकती है जिससे लोगों के पास रेखाओं के बीच संबंध का वर्णन करने के लिए सभी प्रकार के शब्द होते हैं।

बाइबिल हिब्रू में समानांतर संरचनाओं और समानता का वर्णन और विश्लेषण करने पर पूरी किताबें, बड़ी किताबें लिखी गई हैं। वास्तविक मुद्दा जिससे हम निपट रहे हैं, वह यह है कि जब कवि ने लिखा था, तो उसने वास्तव में दो अलग-अलग वाक्य नहीं लिखे थे, फिर हमें किसी तरह एक साथ रहना चाहिए जैसे कि ए प्लस बी बराबर ए, बी, या सी, कुछ नया। लेकिन इसके बजाय, यह एक एकल कथन है जिसमें दो भाग शामिल हैं।

इसलिए, किसी आयत की पहली पंक्ति को बिना दूसरी या तीसरी, यदि कोई हो, पढ़े बिना पढ़ना नाजायज़ है। इसे कभी भी एक अलग बयान के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। किसी आयत की पहली पंक्ति को ध्यान में रखे बिना दूसरी पंक्ति पढ़ना भी नाजायज़ है।

छंद अभिप्रेत था या समानांतर, मुझे छंद नहीं कहना चाहिए क्योंकि समानांतर रेखाएं छंद प्रभागों में विस्तारित हो सकती हैं। क्योंकि याद रखें, फिर से, पद्य सीमाएँ, पद्य सीमाएँ बाइबिल पाठ की तुलना में, मूल पाठ की तुलना में बहुत बाद की हैं। समानांतर रेखाएँ एक साथ, वे सभी एक साथ, एक बयान बनाती हैं, एक दावा करती हैं, एक प्रश्न पूछती हैं, प्रार्थना करती हैं, या कुछ और, जो कुछ भी हो सकता है।

तो, हम यह पूछने की कोशिश कर रहे हैं कि इनके बीच क्या संबंध है? दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति में क्या जोड़ती है? या पहली पंक्ति क्या करती है, पहली पंक्ति हमें दूसरी पंक्ति को समझने में कैसे मदद करती है? क्योंकि आखिरकार, अगर हम इसे लगातार पढ़ते हैं, जिसके बारे में हमारे पास कोई विकल्प नहीं है, मेरा मतलब है, भाषा इसी तरह काम करती है, है ना? एक समय में एक शब्द. तो, हम एक पंक्ति से दूसरी पंक्ति पढ़ते हैं, मैं यह पंक्ति पढ़ता हूँ, जो अब अगली पंक्ति को समझने का आधार बन जाती है, जो लगभग, जैसा कि हम कह सकते हैं, इसके शीर्ष पर बनी है। इसलिए, इमारत को समझने के लिए, हमें नींव को समझना होगा, या मैं अपने रूपकों को मिला रहा हूँ, मुझे पता है कि यह समस्याग्रस्त है।

लेकिन हम पूछ रहे हैं कि ये बातें कैसे संबंधित हैं? और इन दोनों विचारों को एक साथ रखकर वह क्या कह रहे हैं? तो फिर भी, वह हमें यह क्यों बताना चाहता है कि भजन 114 की पहली पंक्ति में मिस्र की पहचान किसी तरह हकलाने वाली जीभ वाले लोगों या किसी विदेशी या अजीब भाषा वाले लोगों से की जाती है? नील नदी की भूमि से ही क्यों न कहें? मेरा मतलब है, फिरौन की भूमि, वह भूमि जहां यूसुफ दूसरे नंबर पर था, हम बहुत सी चीजों का उपयोग कर सकते थे। लेकिन उन्होंने उस विशेष शब्द या उस विशेष विचार को दूसरे के समानांतर करने के लिए क्यों चुना, जो उन्होंने पहली पंक्ति में कहा था? और हम शुरू से ही पूछ सकते हैं कि पहली पंक्ति में वह शब्द क्यों चुनें? यह क्यों कहते हैं, कि जब इस्राएल मिस्र से निकला, तो यह क्यों नहीं कहते, कि जब इस्राएल परायी भाषा बोलनेवाले लोगों में से अर्थात् याकूब के घराने मिस्र से निकला? क्या इसका कोई महत्व है? आह, आप देखिए, यह एक कविता में लेखक की पसंद के पूरे प्रश्न का हिस्सा है। इसलिए, यदि आप सॉनेट लिख रहे हैं, तो आप 142 अक्षरों का उपयोग नहीं कर सकते, आप ऐसा नहीं कर सकते।

आपको दूसरा शब्द ढूंढना होगा. आपको तुकबंदी योजना में फिट होना होगा। आपको यह शब्द पसंद है, लेकिन इसमें तुकबंदी नहीं है.

क्षमा करें, आपको इससे छुटकारा पाना होगा। जाओ एक और ले आओ. चूंकि आपने एक निश्चित तरीके से संवाद करना चुना है, वास्तव में उस तरीके से संवाद करने के लिए, आपको संचार की उस पद्धति के नियमों, परंपराओं का पालन करना होगा।

और बाइबिल कविता में, सामान्य परंपरा यह है कि पंक्तियाँ समानांतर होंगी। अब, जैसा कि मैंने पहले कहा, सभी पंक्तियाँ ऐसी नहीं हैं। हमारे अनुवाद इसे इस तरह से देखते हैं क्योंकि बहुत ही कम, कोई अनुवाद वास्तव में पूरे पृष्ठ पर एक ही वाक्य के रूप में पाठ की एक पूरी पंक्ति लिखता है।

इसके बजाय, मुझे इसका कारण निश्चित नहीं है, और मैं उद्देश्यों पर दोष नहीं लगा रहा हूँ। इसका एक हिस्सा डबल-कॉलम बाइबिल की ओर कदम है, जिससे लंबी लाइनें रखना और अधिक कठिन या लंबी लाइनें रखना असंभव हो जाता है। दूसरी बात, हालाँकि, मुझे ऐसा लगता है कि सामान्य तौर पर विद्वता की ओर से यह दृढ़ विश्वास है कि बाइबिल कविता को समानांतर होना चाहिए।

और इसलिए, हमें दो पंक्तियाँ मिलेंगी, भले ही वे वहाँ न हों। हम इसे तोड़ने के लिए बस एक ऐसी जगह चुनेंगे जहाँ इसका कोई मतलब हो, क्रिया के बाद इसे तोड़ेंगे, और वस्तु को दूसरी पंक्ति में या ऐसा ही कुछ रखेंगे। इसलिए, यदि आप भजन 2 पर वापस जाएं, जिसे हमने इस व्याख्यान की शुरुआत में देखा था, तो हम भजन 2 में देखते हैं कि यह कहता है, राष्ट्रों में हंगामा क्यों हो रहा है और लोग व्यर्थ की योजना क्यों बना रहे हैं? श्लोक एक, बहुत समानांतर, लोग, राष्ट्र, हंगामा, व्यर्थ चीज़ की कल्पना करना।

पृथ्वी के राजा अपना अपना पक्ष रखते हैं, और हाकिम मिलकर सम्मति करते हैं। खैर, पृथ्वी के राजाओं, शासकों, अपना रुख अपनाओ, एक साथ सलाह करो। यह सब बहुत समानान्तर लगता है।

लेकिन आखिरी को देखो, वे वास्तव में, इस विशेष अनुवाद में, श्लोक दो में एक तीसरी पंक्ति है, जो कहती है, यहोवा के खिलाफ और उसके अभिषिक्त के खिलाफ। लेकिन वास्तव में, यह काम नहीं करता है, है ना? क्योंकि यह कोई वाक्य नहीं है, यह कोई उपवाक्य नहीं है, यह सिर्फ एक वाक्यांश है। और यह वास्तव में श्लोक दो की दूसरी पंक्ति का हिस्सा है।

लेकिन जिस तरह से अनुवाद इसे दिखता है, ऐसा लगता है, ओह, किसी तरह यह तीसरी पंक्ति है जिसे पहले दो में जोड़ा जा रहा है। और मुझे यह पता लगाने की जरूरत है कि यह पंक्ति कैसे संबंधित है। खैर, यह संबंधित है क्योंकि यह दूसरी पंक्ति में क्रिया का एक अप्रत्यक्ष उद्देश्य है।

तो, वास्तव में हमारे पास तीन शब्दों की तीन पंक्तियाँ हैं। और फिर चौथी पंक्ति सात शब्दों की है। और फिर हमारे पास अन्य छह पंक्तियाँ हैं जो तीन शब्द हैं, प्रत्येक में तीन या चार शब्द हैं, और फिर छंद छह, सात शब्द हैं।

इसलिए, श्लोक दो के बाद वास्तव में हमारी संरचना में थोड़ा सा बदलाव आया है। और इससे हमें आश्चर्य होना चाहिए, ठीक है, अगर संरचना में कोई टूट-फूट है, तो क्या इसका कोई कारण है? क्या यह मनमाना है? नहीं, देखिए, यही खतरा है। कहने का तात्पर्य यह है कि उन्होंने काव्यात्मक कारणों या काव्यात्मक प्रभाव से ऐसा किया।

आप देखिए, दोस्तों, यह वास्तव में एक पुलिस वाला है। हम ऐसा नहीं कह सकते. क्योंकि कवि मनमानी नहीं करते.

मुझे लगता है कि कभी-कभी हम चीजों की व्याख्या कर सकते हैं और शायद हमें कुछ विस्तृत व्याख्याएं मिलती हैं और आश्चर्य होता है कि क्या वास्तव में यही हो रहा है? लेकिन मुझे संक्षेप में पढ़ने दीजिए यह मौली पीकॉक की पुस्तक से एक बहुत ही संक्षिप्त उद्धरण है। वह कहती है, क्या मैं इसे बना रही हूं? क्या ये सच हो सकता है? खैर, मैं उद्धरण नहीं पढ़ सकता। लेकिन मैं इसे आपके लिए संक्षिप्त रूप में कह सकता हूं।

वह कहती है, क्या यह वास्तव में संभव है कि यह सारा अर्थ इन पंक्तियों में पैक किया गया है, जो कि ध्वनि और छवि और अर्थ और कार्य और रेखा की लंबाई और संरचना का परस्पर संबंध है? और वह कहती है, ठीक है, आप जानते हैं कि जब एक कवि काम करता है, तो वास्तव में उसका दाहिना मस्तिष्क काम करता है और वह जो करने की कोशिश कर रहा है उसका बायां मस्तिष्क बनाता है। ताकि कविता रचने की प्रक्रिया के भीतर चीजें सहक्रियात्मक रूप से घटित हों जिनके बारे में कवि को पूरी तरह से जानकारी भी न हो। लेकिन वे वास्तव में कविता के अर्थ की प्रकृति से अभिन्न अंग हैं क्योंकि वे इसकी संरचना का हिस्सा हैं।

और याद रखें, हम संरचना के बारे में सोच रहे हैं क्योंकि हम उसी तरह सोचना चाहते हैं जैसे कवि अपने विचारों के बारे में सोचता है। तो, हम कहते हैं कि भले ही ऐसा लगता है, और अधिकांश अनुवाद श्लोक दो के बजाय श्लोक तीन के बाद विराम देंगे, भजन दो में, ऐसा लगता है कि यह वहीं है जहां इसे होना चाहिए। लेकिन जिस तरह से कविता बनाई गई है, किसी भी तरह से कविता दो के बाद ब्रेक आना चाहिए।

श्लोक तीन समाप्त हो गया है। खैर, और भी चीजें हैं जो श्लोक चार को तोड़ती हैं, क्योंकि यदि आप पढ़ते हैं, तो आप कहते हैं कि श्लोक चार स्पष्ट रूप से भगवान के बारे में बात कर रहा है, जबकि श्लोक तीन अभी भी राजाओं और पृथ्वी के शासकों के बारे में बात कर रहा है जो सलाह ले रहे हैं और आदि श्लोक एक और दो में।

तो श्लोक एक, दो और तीन अपनी सामग्री के संदर्भ में एक साथ बंधे हैं। लेकिन श्लोक तीन को श्लोक एक और दो की संरचना से श्लोक एक और दो से अलग किया गया है। असल में, ठीक है, मुझे पता है कि यह उचित नहीं है, लेकिन मैं आपको हिब्रू में कुछ दिखाने जा रहा हूं जो भजन 2 श्लोक एक और दो में वास्तव में अद्भुत है।

पहली चार पंक्तियों में चार क्रियाएँ हैं, अर्थात् श्लोक एक और दो। पहली क्रिया है, आइए इसे हिब्रू में परफेक्ट कहें। अगली क्रिया अपूर्ण है।

तीसरी क्रिया अपूर्ण है। और चौथी क्रिया पूर्ण है। तो आप देखिए, हम फिर से उस एबीबीए पैटर्न पर वापस आ गए हैं, जिस चीज के बारे में हमने बात की थी।

क्या यह एक संयोग है? क्या कवि को नहीं पता था कि वह उन क्रिया रूपों का उपयोग कर रहा था? या क्या उसने उन्हें बस उसी तरह उस व्यवस्था में डाल दिया जिस तरह से यह काम करता

था? वास्तव में, यदि हम होते, जो हम हिब्रू में नहीं कर सकते, तो यहीं पर अनुवाद में बात करना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। लेकिन अगर हम वास्तव में कविता लिखें, और कहें, हम प्रत्येक पंक्ति के विषय को ए और क्रिया बी और विधेय, या वस्तु सी कहेंगे, तो हम पाएंगे कि वाक्यों का क्रम वास्तव में उलटा है। इसलिए कि श्लोक एक का पूरा भाग एक चिआज़्म है और श्लोक दो का सारा भाग एक चिआज़्म है।

और फिर श्लोक एक और दो में चार क्रियाएं, एक अलग चिआस्म बनाकर दोनों चिआस्म को एक साथ बांधती हैं। और हम कहते हैं, क्या वह संयोग है? मुझे नहीं लगता। और श्लोक तीन, चार, पांच, एक अलग तरह की समानता पर चलते हैं जहां यह सिर्फ ऐसा होता है अगर हम क्रिया, विषय-क्रिया वस्तु चीज करते हैं, तो यह सिर्फ एबीसी, एबीसी, एबीसी होगा, वे सिर्फ वे हैं। फिर भी वही।

अब कोई चिआस्म नहीं है। दुर्घटना? नहीं - नहीं। कवि ठीक-ठीक जानता था कि वह क्या है, हम शायद ठीक-ठीक नहीं जानते कि वह ऐसा क्यों कर रहा था।

लेकिन वह ऐसा बहुत जानबूझकर कर रहा था। और आप देखते हैं, यह एक कविता पढ़ने का एक हिस्सा है, बस यह कहना है, वाह, यह वास्तव में बहुत अच्छा है। यह कविता के प्रति एक वैध प्रतिक्रिया है।

और फिर शुरू करने के लिए और फिर हम कहते हैं, यह अच्छा क्यों है? और वह इसे वैसा दिखाने के लिए इतनी मेहनत क्यों करेगा? कहीं न कहीं इसका कोई कारण है, भले ही हम इसके बारे में नहीं सोच सकते हैं, प्रक्रिया का एक हिस्सा यह विचार करना है कि इसके पीछे क्या कारण हो सकता है। आइए मैं आपको एक और प्रकार की पुनरावृत्ति दिखाता हूं, और फिर मैं थोड़ी बड़ी संरचनाओं की ओर बढ़ूंगा। भजन 113 पर वापस जाने के लिए।

भजन 113 भजनों के एक समूह की शुरुआत है जो 113 से 118 तक चलता है जिसे मिस्र का हालेल कहा जाता है, जो हर साल फसह के मौके पर गाया जाने वाला एक गीत है। और इन सभी भजनों में जो समानता है वह यह है कि इनमें हललूजाह शब्द है, जिसका अर्थ है याह की स्तुति करना, जो यहोवा का संक्षिप्त शब्द रूप है। इसलिए आरंभ या अंत या दोनों में प्रभु की स्तुति करो।

भजन 113 शुरू होता है, प्रभु की स्तुति करो, हललूयाह, और समाप्त होता है, प्रभु की स्तुति करो, हललूजाह। वह समानांतर नहीं है। मेरा मतलब है, यह समानता है क्योंकि वे समानांतर हैं, लेकिन वास्तव में यह दोहराव है, जिसका मतलब बिल्कुल वही है।

अब, जब किसी स्तोत्र के आरंभ में या स्तोत्र के अंत में ऐसा कुछ होता है, तो एक कवि ऐसा क्यों करेगा? उसने जो पहली बार कहा था उसे दोबारा क्यों बोलेगा? भजन 103, हे मेरे प्राण, प्रभु को धन्य कहो। भजन 103 समाप्त, हे मेरे प्राण, प्रभु को धन्य कहो। कवि ऐसा क्यों करेगा? इसके बारे में सोचो।

पहली बार, या जब हम भजन 113 पढ़ते हैं, तो मान लें कि हम सभी प्रकार के धार्मिक बोझ के साथ नहीं आ रहे हैं। ठीक है। तो, हम भजन 113 पढ़ते हैं, और यह कहता है, प्रभु की स्तुति करो।

स्वाभाविक प्रतिक्रिया क्या है? आपको शायद याद होगा जब आप आठ साल के थे जब आपके पिता ने कहा था, कचरा बाहर निकालो। स्वाभाविक प्रतिक्रिया क्या है? क्यों? हाँ। इसलिए, जब हम भजन के अंत में आते हैं, और हम प्रभु की स्तुति पढ़ते हैं, तो क्यों का उत्तर पहले ही दिया जा चुका है।

तो, आप देखिए, भले ही यह दोहराया गया है, यह दोहराव है, शब्द, शब्दों की सामग्री वही है। कथनों के अर्थ और कार्य बहुत भिन्न हैं। पहला है सम्मन.

दूसरा एक आह्वान है जो एक ही समय में एक अनुस्मारक है, क्योंकि छंद चार से नौ में, वह हमें यह समझाते हुए भगवान की स्तुति करने के कई कारण देता है कि वह कितना महान है, और वह अपने लोगों के लिए कितना उदार और अच्छा है। इसलिए भले ही वे समानांतर हैं, वास्तव में, दोहराव, उनका कार्य समान नहीं है, शब्दावली का अर्थ समान नहीं है, शब्दकोष का अर्थ भी समान है, लेकिन उद्देश्य भी समान नहीं है। भजन 103 के साथ भी यही बात है, हे मेरी आत्मा, प्रभु को आशीर्वाद दो।

भजन की शुरुआत में इसे कहने, भजन को इस तरह से शुरू करने और अंत में इसे फिर से कहने, 22 छंद बाद में, या 21 छंद बाद में 22 छंद में कहने के बीच एक बड़ा अंतर है, जब वह सभी की एक विशाल सूची से गुज़रा है यही वाक्य ने अपने लोगों के लिये जो अच्छे काम किये हैं। अब हम जानते हैं कि हम किसे आशीर्वाद दे रहे हैं, हम उसे क्यों आशीर्वाद दे रहे हैं, उसने हमारे लिए क्या किया है। यह संयोगवश स्तुति के गीतों, पूजा और स्तुति के इन भजनों की एक और विशेषता को इंगित करता है, जो यह है कि भजन, बाइबल, हमें कभी भी केवल इसलिए ईश्वर की स्तुति करने के लिए नहीं बुलाती है क्योंकि वह मौजूद है।

कभी-कभी आप यह कहते हुए सुन सकते हैं, लोग कहते हैं, ठीक है, उसने मेरे लिए जो किया है, उसके लिए मैं उसकी स्तुति नहीं करना चाहता। मैं बस उसकी प्रशंसा करना चाहता हूँ क्योंकि वह कौन है। दोस्तों, यह गैर-बाइबिल है, मुझे यह कहते हुए खेद है।

बाइबल हमें हमेशा कारण बताती है। और इसका कारण अक्सर हमारा स्वार्थ होता है। भगवान ने मेरे लिए क्या किया है, भगवान ने हमारे लिए क्या किया है, इसलिए हम उनकी स्तुति करते हैं।

कभी-कभी यह सृजन, सृजन के कार्य के कारण होता है। अधिकांश समय, यह वास्तव में मुक्ति या उद्धार का कार्य है। और जो वास्तव में आश्चर्यजनक है, हमें वहां जाने में समय नहीं लगेगा, यदि आप प्रकाशितवाक्य अध्याय चार और पांच की ओर मुड़ते हैं, तो वहां तीन गीत हैं जो जॉन स्वर्गीय पूजा में सुनता है जब वह आत्मा द्वारा उठाया जाता है।

पहला बहुत व्यापक है। दूसरा ईश्वर की स्तुति उसके सृजन कार्य और उसकी सृष्टि को कायम रखने वाले विधान के कारण करता है। और तीसरा उद्धार के कार्य के लिए मेम्ने की प्रशंसा करता है।

वही कारण जो हमें भजन संहिता की पुस्तक में परमेश्वर की स्तुति करने के लिए मिलते हैं। यह एक और कारण है कि हम बाइबिल कविता के बारे में बात करते हैं, न कि वास्तव में पुराने नियम की कविता के बारे में क्योंकि वास्तव में, यह सब एक है। कुछ हिब्रू में लिखे गए हैं और कुछ ग्रीक में लिखे गए हैं, लेकिन यह सब एक है।

इसलिए, हम बात करने के लिए, खुद को मजबूर करने के लिए, खुद को प्रोत्साहित करने के लिए, मुझे कहना चाहिए, ध्यान देने के लिए, इस बारे में सोचने के लिए कि ये दो पंक्तियाँ एक साथ क्या कह रही हैं, और लेखक ने इसका उपयोग क्यों किया होगा, पंक्तियों के बीच के संबंध को देखते हैं। ऐसा कहने के लिए, वे दो पंक्तियाँ, उन्हें संयोजित करें। और याद रखें कि हम उन्हें अलग नहीं करते हैं। हम सिर्फ एक पंक्ति नहीं पढ़ते हैं, जैसे कि एक कहावत का आधा हिस्सा पढ़ना, एक बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को खुश करता है।

ठीक है। लेकिन यह पूरी कहावत नहीं है। यह वह सब कुछ नहीं कहता जो कहा जाना चाहिए।

मूर्ख पुत्र अपनी माता का दुःख होता है। आह, देखिए, उस मामले में विरोधाभास, प्रत्येक के अर्थ को उनकी तुलना में कहीं अधिक उच्च स्तर पर ले जाया है, यदि वे केवल अपने आप में खड़े हों। और हमें न केवल एक प्रकार के व्यवहार के, बल्कि दोनों प्रकार के व्यवहार के परिणाम दिखाता है।

उसी तरह भजनों में, जो चीजें हम पढ़ते हैं, वे एक-दूसरे के समानांतर होती हैं, जो मिलकर हमें एक या दोनों के अलग-अलग अर्थ से बड़ा अर्थ देती हैं। अब, जब हम संरचनाओं को देखते हैं, यदि हमें सभी भजनों का विश्लेषण और रूपरेखा तैयार करनी होती है, तो आपको बहुत जल्दी, भजन 3 से शुरू करते हुए, वास्तव में पता चल जाएगा कि भजनों के लिए कुछ काफी मानक रूपरेखाएँ हैं। स्तोत्र का लगभग एक तिहाई भाग वास्तव में स्तोत्र 13 जैसा दिखता है।

मैं आपको भजन 13 की एक बहुत ही मोटी रूपरेखा देता हूँ। पहले तीन छंदों में, हमारे पास ये प्रश्न हैं। हे यहोवा, तू कब तक मुझे सदा के लिये भूला रहेगा? तू कब तक मुझसे अपना मुँह छिपाओगे? मैं कब तक अपने मन में सम्मति करता रहूँगा, और दिन भर मेरे हृदय में दुःख होता रहेगा? मेरा शत्रु कब तक मुझ पर प्रबल रहेगा? वे भगवान को संबोधित हैं, कई अन्य भजनों की तरह जो अनुवाद में, आमतौर पर, हे भगवान, या हे भगवान, या हे, मेरे भगवान से शुरू होते हैं।

वह कॉल, मूल रूप से, ईश्वर को उसका ध्यान आकर्षित करने या ऐसा ही कुछ करने के लिए बुलाती है। वे ऐसे ही प्रतीत होते हैं, ध्यान देने की अपील। मेरे कहने का मतलब यह है कि क्या तुम मुझे हमेशा के लिए भूल जाओगे? यह कहने का एक सशक्त तरीका है, मुझे लगता है कि आप मुझे हमेशा के लिए भूल गए हैं।

तो, इस तरह, और जो चल रहा है, उसके बाद मदद के लिए अनुरोध किया जाता है। भजन 3 में, यहाँ अनुरोध है। ध्यान दो, मुझे उत्तर दो, हे यहोवा मेरे परमेश्वर, मेरी आँखों को ज्योति दे, या शायद मेरी आँखों को चमका दे, ऐसा ही कुछ।

यही उनका अनुरोध है। फिर वह प्रभु को कुछ कारण बताता है कि उसे उस अनुरोध का उत्तर क्यों देना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि मैं मृत्यु की नींद सो जाऊँ, और मेरे शत्रु यह न कहें कि मैं ने उस पर विजय पा ली है, या मेरे विरोधी मेरे हिल जाने से आनन्दित हों।

तो, वास्तव में, आप श्लोक चार में समानता देख सकते हैं, मेरे शत्रु, मेरे विरोधी, मैंने उन पर विजय प्राप्त कर ली है, ऐसा न हो कि जब मैं हिल जाऊँ तो वे आनन्दित हों। यह सटीक समानता नहीं है, लेकिन यह बहुत करीब है, और पर्यायवाची है। वह एक कारण है, और दूसरा कारण यह है कि कहीं मैं मर न जाऊँ।

इसलिए, वह सिर्फ भगवान से नहीं पूछता है, वह उसे कारण बताता है कि वह क्यों सोचता है कि यह मूल रूप से एक अच्छा प्रार्थना अनुरोध है। फिर यहाँ श्लोक पाँच में एक कथन है, लेकिन मैंने आपकी प्रेममयी दयालुता पर भरोसा किया है, मेरा दिल आपके उद्धार में आनन्दित है, जो विश्वास या आश्वासन या किसी प्रकार की आशा की अभिव्यक्ति है कि प्रभु ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया है या उत्तर देने वाला है, इसका उत्तर दूंगा। और फिर श्लोक छह में, वह कहता है, मैं यहोवा के लिए गाऊंगा क्योंकि उसने मेरे साथ उदारतापूर्वक या अच्छा व्यवहार किया है।

पुनः, ध्यान दें कि यह भजन की अंतिम पंक्ति है, और यह एक वाक्य है, और यह वास्तव में बहुत लंबा है। लंबी लाइनों के कार्य का एक हिस्सा चीजों को बंद करना है। तो, श्लोक छह में, हमें एक वादा मिलता है।

मैं यही करूँगा। तो, वह कहता है, तुम मुझे कब तक भूलोगे? कहने का तात्पर्य यह है कि मैं प्रभु का भजन गाऊंगा क्योंकि उसने मेरे साथ उदारतापूर्वक व्यवहार किया है, मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया है। और छह छंदों के स्थान में, एक संबोधन या आह्वान से इस रूपरेखा के माध्यम से, एक आह्वान किसी को बुलाना है, किसी को बुलाना है, उन्हें आमंत्रित करना है, मदद के लिए प्रार्थना करना है, याचना के अपने कारणों के लिए, भगवान की प्रेरणा क्यों है, उनके आत्मविश्वास की अभिव्यक्ति और उनके वादे को।

कभी-कभी यह गाने का वादा होता है। कभी-कभी यह बलिदान चढ़ाने का वादा होता है। कभी-कभी यह विशेष रूप से कहता है, मैं अपने भाइयों के साम्हने प्रभु की भलाई के विषय में गवाही दूंगा।

तो, सभी प्रकार के वादे, सभी प्रकार के... अब, स्तोत्र का एक तिहाई हिस्सा ऐसा दिखता है। भजनों का एक तिहाई, उनमें से 52 या 53। और हमेशा उनका अंत इसी प्रकार होता है।

सिवाय इसके कि, मुझे एक अपवाद के साथ, भजन 88 कहना चाहिए। भजन 88 किसी जयकार या किसी वादे के साथ समाप्त नहीं होता है। इसके बजाय, भजन 88 यह कहते हुए बहुत ग्राफिक रूप से समाप्त होता है, आपने प्रेमी और मित्र को मुझसे दूर कर दिया है।

मेरे परिचित अंधकारमय हैं। एक प्रकार का बमर। लेकिन फिर एक प्रश्न जो हम स्वयं से पूछते हैं, वह यह है कि यदि कोई ऐसा पैटर्न है जिसका कवि अनुसरण करते हैं, तो भजन 88 उस पैटर्न का पालन क्यों नहीं करता है? क्या इस कवि का दिन सचमुच, सचमुच, सचमुच खराब था? शायद।

या क्या धर्मग्रन्थ में इसकी उपस्थिति महज़ एक अनुस्मारक है कि हम हमेशा सुरंग के अंत में प्रकाश नहीं देखेंगे? मेरा मतलब है, कम से कम यह अभी भी भगवान को संबोधित एक प्रार्थना है, है ना? वह उससे शिकायत कर रहा है, लेकिन वह कम से कम उससे बात तो कर रहा है। वास्तव में, यह इस तरह की रूपरेखाओं पर ध्यान देने के मूल्यों में से एक की ओर इशारा करता है। और वह यह है कि हम दो या तीन भजनों की तुलना कर सकते हैं जिनका पैटर्न समान है।

और हमने देखा कि एक स्तोत्र में, कारण और प्रेरणा पाँच या 10 छंद लंबे हैं। एक अन्य स्तोत्र में, शिकायत वह भाग है जो 10 छंद लंबा है। एक अन्य स्तोत्र में, अंत में वादा आगे और आगे और आगे और आगे बढ़ता रहता है।

भजनहार एक बार अपनी बात पूरी कर लेने के बाद सभी चीजें करेगा। और इसलिए हम अपने आप से कहते हैं, ठीक है, इसलिए वह इस विचार को ले रहा है, लेकिन इस भजन में, इस कविता में, इस विलाप में, जैसा कि उन्हें कहा जाता है, वह वास्तव में इस विचार या इस विचार पर जोर दे रहा है। और क्यों? और यह उसी प्रकार की अन्य कविताओं से कैसे तुलना और विरोधाभास करती है? तो यह एक बहुत ही दिलचस्प अभ्यास है।

सॉनेट कई सैकड़ों वर्षों से लिखे जा रहे हैं। यदि आप इसे लें, तो ऑक्सफ़ोर्ड ने द बुक ऑफ़ सॉनेट्स नामक एक अच्छी छोटी पुस्तक प्रकाशित की है। यदि आपको इसे प्राप्त करना है और इसे पढ़ना है, और आप खुद से पूछते हैं, तो मुझे पता है कि एक सॉनेट को एक निश्चित प्रकार के तर्क का पालन करना चाहिए।

यह सॉनेट उसमें कैसे फिट बैठता है? और वह इसका पूरी तरह पालन क्यों नहीं करता? पैटर्न थोड़ा अलग क्यों दिखता है? वह चीज़ों को पुनर्व्यवस्थित क्यों करता है? क्यों? तो, हम इस बारे में सोचना शुरू करते हैं कि एक कवि ऐसा कुछ क्यों लेगा जो कमोबेश मानकीकृत है और उसमें थोड़ा बदलाव करेगा। क्योंकि बदलाव कविता के अर्थ का हिस्सा है। क्योंकि कविता में स्वरूप और अंतर्वस्तु यूँ ही साथ-साथ नहीं रहते।

और ऐसा नहीं है कि रूप केवल सामग्री का समर्थन करता है, बल्कि रूप, आकार वास्तव में इसका हिस्सा है। और इसीलिए हम ध्यान देते हैं। सराहना याद रखें, हमने अच्छे कारक के बारे में बात की थी।

खैर, यह उस इच्छा का हिस्सा है कि हम उसे देखें। ओह, सारा काम देखो. उन्होंने इसे एक साथ रखा.

और देखो जब वह इसे एक साथ रखता है तो वह क्या कहता है। देखिए, जब आप भजन 2 की शुरुआत में उन पंक्तियों के पैकेज को एक साथ रखते हैं तो यह क्या कहता है। खैर, कविता इसी तरह संचार करती है। मेरे पास केवल कुछ मिनट हैं।

तो, मैंने अभी भजन के एक अन्य मुख्य प्रकार का उल्लेख किया है, और वह है प्रशंसा के भजन जो 113 की तरह हैं। वे हमेशा एक ही पैटर्न का पालन करते हैं। वे प्रशंसा के आह्वान, आदेश, फिर प्रशंसा के कारणों से शुरू करते हैं और फिर प्रशंसा के आह्वान के साथ समाप्त होते हैं।

कभी-कभी उनमें से एक लंबा या छोटा होता है। तो, भजन 150 में, प्रशंसा करने के कारण मूल रूप से एक पंक्ति का आधा हिस्सा है, श्लोक तीन, और अंतिम पांच पंक्तियाँ इन सभी उपकरणों के साथ प्रशंसा करने के लिए कॉल हैं। खैर, मेरा तात्पर्य पाँच श्लोकों से है।

खैर, भजन 150 में भजन 148 की तुलना में एक अलग जोर है, जहां भजन 148 में जोर इस बात पर है कि प्रशंसा कौन कर रहा है। भजन 150 में जोर इस बात पर है कि स्तुति कैसे की जा रही है। लेकिन प्रत्येक मामले में, ऐसा करने के अपने कारण होते हैं।

तो, हम देखते हैं, और ठीक है, मुझे कहना चाहिए, और अन्य प्रकार के भजन भी हैं। ऐसे अन्य पैटर्न भी हैं जो आप देखेंगे। और कभी-कभी पैटर्न को पहचानना आसान होता है।

कभी-कभी वे नहीं होते। लेकिन भजनों को शैलियों के भीतर देखना सीखने से हमें यह देखने में मदद मिलती है कि हमारे पास केवल 150 भजन नहीं हैं, बल्कि हमारे पास वास्तव में 150 कविताएँ हैं जो सामान्य प्रकारों में आती हैं जो हमें एक-दूसरे को देखने, उन्हें व्यक्तिगत रूप से देखने की अनुमति देती हैं। उस प्रकार के भीतर एक-दूसरे पर प्रकाश डालें और देखें कि उनमें से प्रत्येक कैसे कार्य करता है, उनमें से प्रत्येक उस पैटर्न के साथ क्या करता है। इसलिए ध्यान दें, ध्यान से पढ़ें और ध्यान दें कि कवि ने कैसे लिखा ताकि हम उसके बाद उसके विचारों पर विचार करने का प्रयास कर सकें।

यह डॉ. फ्रेड पटनम की भजन पुस्तक पर चार प्रस्तुतियों में से तीसरी थी।